(2) RAPHEL 1483 – 1520
रैफल

यह हाई रिनासाँ की तीसरी महान उपलब्धि थी इसका पूरा नाम रैफेल संजियो था इसका जन्म अंम्ब्रिया में 1483 को हुआ था। यह इटालियन हाई रिनासां की दो अन्य उपलब्धि ल्योनार्डो व माइकेल से उम्र में छोटा था और आम्ब्रिया के निर्धन जियोवान्नी सान्टी का पुत्र था इसके पिता भी कला में रुचि रखते थे किन्तु पिता की मृत्यु पश्चात यह कुछ दिनो तक भटकता रहा। फिर 1500 में पेरुजिनो से कार्य सीखने लगा। यह यशस्वी था इसे डिवाईन (श्रेष्ठ) कलाकार कहा गया है।

व्यवहार कुशल होने के कारण इसकी ख्याती राजनैतिक सत्ता में भी पहुँची। यह एक कुशल राजनीतिज्ञ भी था आगे चलकर इसके बहुत शिष्य बने। यह देवदूत के समान सुन्दर और अच्छा स्वभाव, वार्तालाप में शिष्टाचारी था 1500 से 1510 के मध्य इसकी गणना विशिष्ट कलाकारो में की जाने लगी। इसने अपनी आकृतियों में एक कोमल सौन्दर्य की कल्पना की तथा इसने "वर्जिन एण्ड चाइल्ड" व "सेन्ट एन" के चित्रो से अध्ययन कर उनसे प्रेरणा ली। रैफेल ने अपने गुरु पेरुजिनो के संरक्षण में "सैनिक के स्वप्न" नामक चित्र बनाया तथा इसने अपनी एक अन्य "मैडोना" बनाई जो एक नई अनुकृति थी तथा अपने सौन्दर्य के लिए विख्यात है। इसने अपने चित्रों पर विन्ची के छाया - प्रकाश का प्रभाव अंकित किया है इसने मोनालिसा वाली छाया प्रकाश को अपनी मैडोना पर निरूपित किया अतः रैफेल ने उन महान चित्रो का सृजन किया जो हाई रिनासा की चर्मोपलब्धि कहे जाते है। इसने इस्थानो पर रहकर कार्य किया

(1) आम्ब्रियन काल – 1500 – 1504
(2) फ्लोरेन्टीन काल – 1504 – 1508
(3) रोमन काल – 1508 – 1520

प्रथम काल आम्ब्रियन काल में रैफल ने एक उत्तम कृति की रचना की जो "मैरिज ऑफ दा वर्जिन" नाम से विख्यात है, इस चित्र में वर्जिन की शादी का दृश्य चित्रित है। यह रैफल की प्रारम्भिक काल की श्रेष्ठ कृति है जिसमे इरी तथा महाराई के साथ-2 पेरुजिनो का प्रभाव भी पूर्ण रूपेण दर्शित हुआ है। इसी काल में "सूली का चित्र" भी अपने गुरु से प्रेरणा लेकर बनाया इसके बाद वीजन ऑफ नाइट, कुसिफिक्शन, सेन्ट माइकेल, सेन्टजार्ज तथा थ्री ग्रेसेज नामक कृतियों का सृजन किया। → द्वितीयकाल फ्लोरेन्टीन काल में रैफल ने 1504 में "कुमारी का चित्र" का अंकन किया

द्वितीय काल फ्लोरेन्टाइन काल में रैफेल ने चार वर्षो तक कार्य किया इसकी चित्र पर विन्ची तथा माइकेल का गहरा प्रभाव पड़ा धीरे-2 इसके

Scanned with C

चित्रों में और भी निखार आया यहीं पर उसने "मैडोलिना और डोनी" का चित्रण किया। यहीं पर उसने "माँ और शिशु की श्रृंखला" अनुरंजित की जैसे "सिस्टीन मैडोना" कहते हैं मूलतः इन्हीं चित्रों के कारण रैफल की लोकप्रियता सारे इटली में फैल गई थी इसमें "मैडोना आफ दा गोल्डफिंच" सबसे अधिक प्रशंसनीय है।

रैफल ने "माँ मेरी और शिशु ईशु" की विविध चित्रमालायें चित्रित की जिसमें उसकी मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा का उत्तम परिचय मिलता है। सर विलियम ओरपेन के अनुसार:—

"रूप सौन्दर्य के नाते ही इससे अधिक अच्छे चित्र हैं, किन्तु अभिव्यक्ति में यह चित्र सबसे अधिक गहन है।" इसी काल में रैफल ने "मैडोना डेल कार्डेलिनो, एन्सीडी मैडोना आदि कुछ महत्वपूर्ण चित्र रचना की।

तृतीय काल रोमन काल में रोम में जहाँ माइकेल सिस्टीन चैपल की छत को अलंकृत करने में व्यस्त था वहीं दूसरी तरफ रैफल 'स्टैन्जी' की दीवारों को अलंकृत कर रहा था उसने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृतियों का सृजन रोम में ही किया। और इन कृतियों को क्रमशः चार समूहों में रखा जाता है। (1) भित्ति चित्र (2) टेपेस्ट्री चित्र (कार्टून) (3) पोर्ट्रेट (4) आल्टर पीस (वेदिका चित्र)

रोम में सर्वप्रथम रैफल ने पोप के "स्टैन्जी" अतिथि गृह के दो कक्षों में सात उत्कृष्ट भित्ति-चित्र बनाये यह कार्य रैफल ने पोप जूलियस द्वितीय तथा लियो दशम हेतु 1509 और 1512 के मध्य अंकित किये ये चित्र "कैमरा डेला सिगनेचुरा" के नाम से प्रचलित हैं। इसमें रैफल ने चार विशिष्ट भित्ति-चित्र बनाये गये हैं, धर्म, दर्शन, काव्य और न्याय तथा इनके जो रूपक प्रस्तुत किये हैं। वह है "डिसप्यूटा" (विवाद) इस चित्र में रैफल ने संत गणों के बीच ईसा को बादलों के मध्य चित्रित किया है।

वसारी के अनुसार:—

"चित्र का शीर्षक भ्रामक है क्योंकि इसमें किसी प्रकार का विवाद का दृश्य दिखाया ही नहीं गया है बल्कि महात्मा ईसा और सन्त गणों को चित्रित किया गया है।"

इसके अतिरिक्त रैफल ने एक अन्य विश्व विख्यात कृति का सृजन किया जो "स्कूल आफ एथेन्स" के नाम से चर्चित है। इस चित्र में रैफल ने यूनान के विद्वान साक्रेटीज, प्लेटो, अरस्तु, पाइथागोरस

Scanned with C